भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
लोकसभा
अतारांकित प्रश्न संख्या- 1898
दिनांक 11 मार्च, 2025 के लिए प्रश्न

कृत्रिम गर्भाधान

1898. श्री गुरजीत सिंह औजला:

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत में कृत्रिम गर्भाधान की सफलता दर केवल 30% के करीब है जबकि अमेरिका और यूरोप में यह दर 60-70% और ब्राजील में लगभग 100% है और सरकार इसकी दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए क्या ठोस कदम उठा रही है;

(ख) क्या सरकार मानती है कि संकर प्रजाति के लिए ब्राजीलियाई सांड के वीर्य का आयात भारत की स्वदेशी गायों की नस्लों के आनुवंशिक क्षय का कारण बन सकता है, जोकि संवहनीय दुग्ध उद्योग के लिए अति महत्वपूर्ण है;

(ग) देश में, विशेषकर पंजाब में, दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ स्वदेशी नस्लों की सुरक्षा और इसे बढ़ावा देने के लिए क्या उपाय लागू किए जा रहे हैं; और

(घ) क्या स्वदेशी गायों में कृत्रिम गर्भाधान की सफलता दर में सुधार करने के लिए तकनीकी उन्नति, वैज्ञानिक हस्तक्षेप और नीति पहलों को अपनाया जा रहा है, जिससे भारत की दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित हो सके और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री
(प्रो.एस.पी. सिंह बघेल)

(क), (ग) और (घ): भारत पशुधन पोर्टल पर राज्यों द्वारा सूचित किए गए आंकड़ों के अनुसार देश में कृत्रिम गर्भाधान की सफलता दर 32%-35% के बीच है। पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा देश में देशी नस्लों सहित बोवाइन पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान की दक्षता और सफलता दर बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं, तकनीकी प्रगति, वैज्ञानिक हस्तक्षेप और नीतिगत पहलें की गई हैं।

(i) राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम: इस कार्यक्रम का उद्देश्य कृत्रिम गर्भाधान कवरेज को बढ़ाना और देशी नस्लों सहित उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों के वीर्य के साथ किसानों के द्वार पर गुणवत्तापूर्ण कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं (एआई) प्रदान करना है।

(ii) संतति परीक्षण और नस्ल चयन कार्यक्रम: इस कार्यक्रम का उद्देश्य देशी नस्लों के सांडों सहित उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों का उत्पादन करना है। गोपशु की गिर, साहीवाल नस्लों और भैंस की मुर्राह, मेहसाणा नस्लों के लिए संतति परीक्षण लागू किया जाता है। नस्ल चयन कार्यक्रम के अंतर्गत राठी, थारपारकर, हरियाना, कांकरेज नस्ल के गोपशु तथा जाफराबादी, नीली रावी, पंढरपुरी और बन्नी नस्ल की भैंसें शामिल हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत उत्पादित रोग मुक्त उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों को पंजाब सहित देश भर के वीर्य केंद्रों को उपलब्ध कराया जाता है।

(iii) वीर्य केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण: वीर्य उत्पादन में गुणात्मक और मात्रात्मक सुधार लाने के लिए, राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत वीर्य केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। पशुपालन और डेयरी विभाग ने वीर्य उत्पादन के लिए न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल तैयार किए हैं और पंजाब सहित देश भर में वीर्य केन्द्रों के मूल्यांकन और ग्रेडिंग के लिए केंद्रीय निगरानी इकाई (सीएमयू) का गठन किया है।

(iv) ग्रामीण भारत में बहुउद्देश्यीय कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (मैत्री): मैत्री को किसानों के द्वार पर गुणवत्तापूर्ण कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित और सुसज्जित किया जाता है। इसके अलावा, पंजाब सहित कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियनों और पेशेवरों के पुनश्चर्या प्रशिक्षण के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

(v) सेक्स सॉर्टेड वीर्य: विभाग ने गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में स्थित 5 सरकारी वीर्य केन्द्रों पर सेक्स सॉर्टेड वीर्य उत्पादन सुविधाएं स्थापित की हैं। 3 निजी वीर्य केन्द्र भी सेक्स सॉर्टेड वीर्य खुराक का उत्पादन कर रहे हैं। अब तक देशी नस्ल के सांडों सहित उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों से 1.17 करोड़ सेक्स-सॉर्टेड वीर्य की खुराकें उत्पादित की गई है और कृत्रिम गर्भाधान के लिए उपलब्ध कराई गयी हैं।

(vi) सेक्स सॉर्टेड वीर्य का उपयोग करके त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम: इस कार्यक्रम का उद्देश्य 90% तक सटीकता के साथ बछियों का उत्पादन करना है, जिससे नस्ल सुधार और किसानों की आय में वृद्धि हो सके। पंजाब सहित सभी राज्यों में यह कार्यक्रम लागू किया गया है। सरकार ने किसानों को उचित दरों पर सेक्स सॉर्टेड वीर्य उपलब्ध कराने के लिए देशी रूप से विकसित सेक्स सॉर्टेड वीर्य तकनीक शुरू की है।

(vii) इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) तकनीक का कार्यान्वयन: देशी नस्लों के उत्कृष्ट पशुओं के प्रसार के लिए, विभाग ने 22 आईवीएफ प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं। एक ही पीढ़ी में बोवाइन आबादी के आनुवंशिक उन्नयन में इस तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। पटियाला और लुधियाना में आईवीएफ प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए पंजाब को निधियां जारी की गई है; दोनों प्रयोगशालाएं अब चालू हो गई हैं। इसके अलावा, किसानों को उचित दरों पर तकनीक उपलब्ध कराने के लिए, सरकार ने स्वदेशी आईवीएफ मीडिया शुरू किया है।

(viii) जीनोमिक चयन: उच्च आनुवंशिक गुणता (एचजीएम) वाले पशुओं का चयन करने और गोपशुओं तथा भैंसों के आनुवंशिक सुधार में तीव्रता लाने के लिए, विभाग ने एकीकृत जीनोमिक चिप्स विकसित की हैं - देशी गोपशुओं के लिए गौ चिप और भैंसों के लिए महिष चिप - जो विशेष रूप से देश में देशी नस्लों के उच्च आनुवंशिक गुणता वाले पशुओं के जीनोमिक चयन की शुरुआत करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।

(ख) देशी नस्लों की अंधाधुंध प्रजनन से सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, देश में सभी आयातित जर्मप्लाज्म का नस्ल शुद्धता परीक्षण किया जाता है। जर्मप्लाज्म के आयात को विनियमित करने और देश में आनुवंशिक विकारों के प्रवेश से बचने के लिए, विभाग ने बोवाइन जर्मप्लाज्म के आयात और निर्यात के लिए दिशानिर्देश तैयार किए हैं।

*****